

॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

॥ चतुर्थः प्रश्नः ॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्रह्म॑णे ब्राह्म॑णमाल॑भते। क्षत्रा॑य राज॒न्यम्। म॒रुद्ध्यो वैश्य॑म्।
तप॑से शू॒द्रम्। तम॑से तस्कर॑म्। ना॒र॑काय वी॒र॒हण॑म्। पा॒प्मने॑
क्ली॒बम्। आ॒क्र॒याया॑यो॒गूम्। का॒मा॑य पु॒ञ्च॒लूम्। अति॑क्रु॒ष्टाय॑
मा॒ग॒धम्॥१॥

गी॒ताय॑ सू॒तम्। नृ॒त्ताय॑ शैलू॒षम्। ध॒र्मा॑य स॒भाच॑रम्। न॒र्मा॑य
रे॒भम्। नरि॑ष्ठायै भी॒म॒लम्। ह॒सा॑य का॒रिम्। आ॒न॒न्दा॑य
स्त्री॑ष॒खम्। प्र॒मुदे॑ कु॒मारी॑पु॒त्रम्। मे॒धायै॑ रथका॒रम्। धै॒र्या॑य
तक्षा॑णम्॥२॥

श्र॒मा॑य कौल॒लम्। मा॒यायै॑ का॒र्मा॒रम्। रू॒पाय॑ मणि॒का॒रम्।
शुभे॑ व॒पम्। श॒र॒व्या॑या इषुका॒रम्। हे॒त्यै ध॑न्वका॒रम्। क॒र्मणे॑
ज्या॑का॒रम्। दि॒ष्टाय॑ रज्जुस॒र्गम्। मृ॒त्यवे॑ मृ॒ग॒युम्। अ॒न्त॑का॒य

श्वनितम्॥३॥

सन्ध्ये जारम्। गेहायोपपतिम्। निर्ऋत्यै परिवित्तम्।
आत्यै परिविविदानम्। अराध्यै दिधिषूपतिम्। पवित्राय
भिषजम्। प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्। निष्कृत्यै पेशस्कारीम्।
बलायोपदाम्। वर्णायानूरुधम्॥४॥

नदीभ्यः पौञ्जिष्टम्। ऋक्षीकाभ्यो नैषादम्। पुरुषव्याघ्राय
दुर्मदम्। प्रयुञ्ज्य उन्मत्तम्। गन्धर्वाप्सराभ्यो ब्रात्यम्।
सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदम्। अवैभ्यः कितवम्। इर्यताया
अकितवम्। पिशाचेभ्यो बिदलकारम्। यातुधानैभ्यः
कण्टककारम्॥५॥

उत्सादेभ्यः कुञ्जम्। प्रमुदे वामनम्। द्वाभ्यः स्नामम्।
स्वप्रायान्धम्। अधर्माय बधिरम्। संज्ञानाय स्मरकारीम्।
प्रकामोद्यायोपसदम्। आशिक्षायै प्रश्जिनम्। उपशिक्षायां
अभिप्रश्जिनम्। मर्यादायै प्रश्जविवाकम्॥६॥

ऋत्यै स्तेनहृदयम्। वैरहत्याय पिशुनम्। विवित्त्यै क्षत्तारम्।

औपद्र॒ष्टाय सङ्ग॑ही॒तारम्। बला॑यानुच॒रम्। भू॒मे परि॑ष्क॒न्दम्।
प्रि॒याय॑ प्रि॒यवा॒दिनम्। अरि॑ष्ट्या अश्व॒सा॒दम्। मे॒धाय॑ वासः
पल्पू॒लीम्। प्र॒का॒माय॑ रजयि॒त्रीम्॥ ७॥

भा॒यै दा॒र्वाहा॒रम्। प्र॒भाया॑ आग्ने॒न्धम्। नाक॑स्य
पृ॒ष्ठाया॑भिषे॒क्तारम्। ब्र॒ध्नस्य॑ वि॒ष्टपा॑य पात्रनिर्णे॒गम्।
दे॒वलो॒काय॑ पे॒शिता॒रम्। म॒नुष्य॒लो॒काय॑ प्र॒करि॒तारम्।
सर्वे॑भ्यो लो॒केभ्य॑ उप॒से॒क्तारम्। अ॒व॒र्त्यै व॒धायो॑पमन्थि॒तारम्।
सु॒व॒र्गाय॑ लो॒काय॑ भा॒गदु॒घम्। व॒र्षि॑ष्ठाय॒ नाका॑य
परि॒वे॒ष्टारम्॥ ८॥

अ॒र्मे॑भ्यो ह॒स्ति॒पम्। ज॒वाया॑श्च॒पम्। पु॒ष्ट्यै गो॒पा॒लम्।
तेज॑सेऽज॒पा॒लम्। वी॒र्या॑यावि॒पा॒लम्। इ॒रा॒यै की॒ना॒शम्।
की॒ला॒लाय॑ सु॒राका॒रम्। भ॒द्राय॑ गृ॒ह॒पम्। श्रेय॑से वि॒त्त॒धम्।
अ॒ध्य॑क्षा॒यानु॒क्ष॒त्तारम्॥ ९॥

म॒न्यवे॑ऽय॒स्ता॒पम्। क्रो॒धा॒य नि॒स॒रम्। शो॒का॒याभि॒स॒रम्।
उ॒त्कूल॑वि॒कूल॑भ्या॒न्नि॒स्थि॒नम्। यो॒गा॒य यो॒क्ता॒रम्। क्षे॒मा॒य

विमोक्तारम्। वपुषे मानस्कृतम्। शीलायाञ्जनीकारम्।
निर्ऋत्यै कोशकारीम्। यमायासूम्॥१०॥

यम्यै यमसूम्। अथर्वभ्योऽवतोकां। संवत्सराय
पर्यारिणीम्। परिवत्सरायाविजाताम्। इदवत्सरायापस्कद्वरीम्
इद्वत्सरायातीत्ववरीम्। वत्सराय विजर्जरां। सर्वन्त्सराय
पलिक्रीम्। वनाय वनपम्। अन्यतोरण्याय दावपम्॥११॥

सरोभ्यो धैव्रम्। वेशन्ताभ्यो दाशम्। उपस्थावरीभ्यो
बैन्दम्। नड्बुलाभ्यः शौष्कलम्। पार्याय कैवर्तम्। अवार्याय
मार्गारम्। तीर्थेभ्य आन्दम्। विषमेभ्यो मैनालम्। स्वनैभ्यः
पर्णकम्। गुहाभ्यः किरातम्। सानुभ्यो जम्भकम्। पर्वतेभ्यः
किंपूरुषम्॥१२॥

प्रतिश्रुत्काया ऋतुलम्। घोषाय भूषम्। अन्ताय
बहुवादिनम्। अनन्ताय मूकम्। महसे वीणावादम्।
क्रोशाय तूणवध्मम्। आक्रन्दाय दुन्दुभ्याघातम्।
अवरस्पराय शङ्खध्मम्। ऋभुभ्योजिनसन्धायम्।

सा॒ध्येभ्य॑श्च॒र्म॒ष्णम्॑ ॥१३॥

बी॒भ॒त्सा॒यै पौ॒ल्क॒सम्। भू॒त्यै जा॒गर॒णम्। अ॒भू॒त्यै स्व॒प॒नम्।
तु॒ला॒यै वा॒णि॒जम्। वर्णा॑य हि॒र॒ण्यका॒रम्। वि॒श्वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यः॑
सि॒ध्म॒लम्। प॒श्चाद्दोषा॑य ग॒ला॒वम्। ऋ॒त्यै ज॒नवा॒दि॒नम्।
व्य॑द्धा अ॒प॒ग॒ल्भ॒म्। स॒ंश॒राय॑ प्र॒च्छि॒दम्॥१४॥

ह॒सा॒य पु॒ंश्च॒लूमा ल॑भते। वी॒णावा॒दङ्ग॑ण॒कङ्गी॒ताय॑।
याद॑से शा॒बु॒ल्याम्। न॒र्मा॒य भ॒द्रव॑तीम्। तू॒णव॒ध्मङ्गा॑म॒ण्यं
पा॒णि॒सङ्घा॑त॒नृ॒त्ताय॑। मोदा॑यानु॒क्रोश॑कम्। आ॒न॒न्दा॒य
त॒ल॒वम्॥१५॥

अ॒क्ष॒रा॒जा॒य कि॒त॒वम्। कृ॒ता॒य स॒भा॒वि॒नम्। त्रेता॑या
आ॒दि॒न॒व॒द॒र्श॒म्। द्वा॒प॒रा॒य ब॒हिः स॒दम्। क॒ल॒ये
स॒भा॒स्था॒णु॒म्। दु॒ष्कृ॒ता॒य च॒रका॑चार्यम्। अध्व॑ने
ब्र॒ह्म॒चा॒रि॒णम्। पि॒शा॒चेभ्यः॑ सै॒लग॒म्। पि॒पा॒सा॒यै गो॒व्य॒च्छ॒म्।
नि॒र्ऋ॒त्यै गो॒घा॒त॒म्। क्षु॒धे गो॒वि॒कर्त॑म्। क्षु॒त्तृ॒ष्णाभ्या॑न्तम्।
यो गां वि॒कृ॒न्त॑न्तं मा॒ंसं भि॒क्ष्मा॑ण उप॒तिष्ठ॑ते॥१६॥

भूम्यै पीठसर्पिणमा लभते। अग्नयेऽसलम्। वायवे
चाण्डालम्। अन्तरिक्षाय वःशनर्तिनम्। दिवे खलतिम्।
सूर्याय हर्यक्षम्। चन्द्रमसे मिर्मिरम्। नक्षत्रेभ्यः किलासम्।
अहे शुक्लं पिङ्गलम्। रात्रियै कृष्णं पिङ्गाक्षम्॥१७॥

वाचे पुरुषमा लभते। प्राणमपानव्याँनमुदानं समा नन्तान्
वायवे। सूर्याय चक्षुरा लभते। मनश्चन्द्रमसे। दिग्भ्यः श्रोत्रम्।
प्रजापतये पुरुषम्॥१८॥

अथैतानरूपेभ्य आलभते। अतिह्रस्वमतिदीर्घम्।
अतिकृशमत्यसलम्। अतिशुक्लमतिकृष्णम्। अतिश्लक्ष्णमति
अतिकिरिटमतिदन्तुरम्। अतिमिर्मिरमतिमेमिषम्। आशायै
जामिम्। प्रतीक्षायै कुमारीम्॥१९॥

ब्रह्मणे गीताय श्रमाय सन्धये नदीभ्य उत्सादेभ्य ऋत्यै भाया अर्मेभ्यो मन्यवे यम्यै
दशदश सरोभ्यो द्वादश प्रतिश्रुत्कायै बीभत्सायै दशदश हसाय सप्ताक्षराजाय त्रयोदश
भूम्यै दश वाचे षडथ नवैकान्नविंशतिः॥१९॥

ब्रह्मणे यम्यै नवदश॥१९॥

ब्रह्मणे कुमारीम्॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके
चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥